रात्रि क्लास 2/2/1967 ओम् शांति

जो जाने वाले हैं उन्होंने अपना अनुभव सुनाया। एक तो सुनाते होंगे हम यहाँ आए हैं बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने। यह है बाप का घर। ब्रह्मा की संतान शिवबाबा से वर्सा लेने आते हैं। वर्सा ब्रह्मा से नहीं मिलता है। शिवबाबा से वर्सा मिलता है। ब्रह्माकुमारी भी बाप का परिचय देती है। इतने ढेर ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा। और कौन होगा? ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण ही रचेंगे। रचता और रचना की आदि–मध्य–अंत को कोई भी नहीं जानते। यह है भी राजयोग। राजाई प्राप्त हुई, सतयुग स्थापन हुआ, फिर नॉलेज खत्म। यह मिलती ही है संगम पर। इनको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। मनुष्य फिर पुरुषोत्तम मास भी मनाते हैं। कोई–2 समय होता जबकि पुरुषोत्तम मास वा पुरुषोत्तम वर्ष कहा जाता है। पुरुषोत्तम युग का तुम ब्राह्मण के सिवाय कोई को भी पता नहीं है। पुरुषोत्तम से पुरुषोत्तम होते ही हैं देवताएँ। यह ल०ना० भी उत्तम पुरुष हैं ना। नारी लक्ष्मी और नर नारायण। यहाँ एम–ऑब्जेक्ट ही यह है। बाबा हमको पुरुषोत्तम बनाते हैं। यह है नम्बरवन स्वर्ग की जीवनमुक्ति सबसे पुरुषोत्तम। फिर राजा–रानी, प्रजा सबको पुरुषोत्तम कहा जाता है। देवी–देवताओं का बहुत ऊँच धर्म है। इनकी महिमा भी है। इसलिए ही पुरुषोत्तम और पुरुषोत्तमनी कहा जाता है। अब यह कहाँ गए, क्या हुआ, यह कोई को कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चे जानते हो यह पुनर्जन्म लेते सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आए हैं। इनको देवता भी कहा जाता है। यह 84 जन्म लेते–2 फिर असुर बन जाते, फिर देवता बनते हैं। पहले–2 बाप की पहचान देनी है। एक तो है लौकिक बाप, दूसरा पारलौकिक परमपिता परमात्मा। उनका नाम शिवबाबा है। गाया भी जाता है शिव परमात्माय नमः। बेहद का बाबा हुआ ना। प्रजापिता ब्रह्मा भी बाबा हुआ। लौकिक भी बाप है। ऊँच ते ऊँच हुआ शिवबाबा। ब्रह्मा तो वर्सा दे नहीं सकते। ब्रह्मा–विष्णु–शंकर के ऊपर है परमपिताय नमः। उनको देवताय नमः कहेंगे। देवताएँ हैं रचना। रचना से वर्सा नहीं मिल सकता। रचता परमपिता परमात्मा है बेहद का। वो आते ही हैं भारत में। शिवजयन्ती भी भारत में ही मनाते हैं। मनुष्यों को तो पता ही नहीं है। बाप को कब सर्वव्यापी थोड़े ही कहा जाता है। वो बाप दुख हर्ता, सुख कर्ता है, तो आना ही (पड़ेगा)। बाप तुमको राजयोग सिखाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। राजयोग मशहूर है। सर्वशास्त्र मयी शिरोमणि है गीता। गीता सभी भाषाओं में है। गीता में है भगवानुवाच्य मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। अब निराकार परमात्मा राजयोग कैसे सिखावेंगे? और है भी ज्ञान का सागर। बोलो, बाप आए हैं। ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं ब्रह्माकुमार–कुमारियों की। रचना कैसे रचे? एडॉप्ट किया। तुम सब ही एडॉप्टिड बच्चे हो। यह दोनों बापदादा इकट्ठे हैं इसलिए हमेशा पत्र भी लिखो तो बापदादा। शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा। बापदादा अक्षर याद कर लेना चाहिए। वर्सा ब्रह्माकुमार–कुमारियों को मिलता है शिवबाबा से। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। वर्सा मिलता है बाप से। सन्यासी किसी को बाप कह नहीं सकते हैं। लौकिक बाप का तो सन्यास कर दिया। उनका नाम भी नहीं सुनावेंगे। अच्छा, बोलो, आत्माओं का बाप? तो भी सर्वव्यापी कह देते हैं। उनका बाप है ही नहीं। आरग्यू बहुत करेंगे। तुम कोई से भी आरग्यू मत करो। बोलो, दो बाप हैं ना। लौकिक और पारलौकिक। वो ज्ञान का सागर है। आकर राजयोग सिखाते हैं। कृष्ण को भगवान नहीं कहा जाता। शिवभगवानुवाच्य। शिव निराकार होंगे, वो किसके तन में आवे? यह बातें तुम समझ और समझा सकते हो। हम बाप को याद करते हैं निरंतर। जानते हैं अंत मते सो गते हो जावेगी। तुम इस एक माशूक के आशिक हो। भगवान एक है। सब दुख में उनको याद करते हैं; क्योंकि भगवान को ही आकर सद्गति करनी है। बाबा कहते हैं और कोई से नहीं सुनो। किसी को देखो भी नहीं। एक बाप को याद करो। वो ही है पतित–पावन। उनको याद करने से तुम पावन बनकर पावन दुनिया में चले जाओगे। तुम भक्ति करते थे अब नहीं करते हो; क्योंकि शिव भगवानुवाच्य सर्व का सद्गति दाता मैं हूँ। मुझे याद करो तो तुम चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। पावन भी बनना पड़े। पतित कहा जाता है विकारी को। क्रोधी, लोभी को पतित नहीं कहेंगे। ओम।